Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, Oct-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

बौद्ध धर्म का भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामयिक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

बौद्ध धर्म का भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामयिक अध्ययन

Dr. Sadik M. Khan

Research Scholar (Social Science) – School of Social Sciences, Devi Ahilya University, Indore (M.P.)

----------X----------

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म क्षत्रिय परिवार में हुआ। इतिहासकारों के अनुसार भगवान बुद्ध का जन्म छटी शताब्दी ई. पूर्व में हिमालय की तराई में कपिल वस्तु नाम का भास्त्रो के गणराज्य में हुआ था। (वर्तमान में नेपाल और भारत की सीमा पर स्थित है।) इनके पिता राज्य के प्रमुख शुद्धोधन थे। इनकी माता का नाम महामाया था। गौतम बुद्ध क्षत्रिय परिवार के थे। जन्म के पांच दिन प" चात नामकरण संस्कार में इनका नाम सिद्धार्थ रख दिया, जिसका अर्थ है '' जिसने लक्ष्य पा लिया'' सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद उनकी माता का देहान्त हो गया। इनकी मौसी तथा शुद्धोधन की दूसरी पत्नी महाप्रजापति गौतमी ने उनका पालन पोषण किया। राजकुमार सिद्धार्थ की शिक्षा 8 वर्ष की अवस्था में शुरू हुई एवं शीघ्र ही समस्त दर्शनों एवं अन्य शास्त्रों में पारंगत हो गये। शाक्य कुल के जन्म लेने के कारण उनको धनुष्य तथा अन्य शास्त्रो का प्रयोग करने की भी शिक्षा दी गई। बचपन से ही सिद्धार्थ का स्वभाव विचारशील था वह एकान्त में बैठकर दुनिया की अच्छी बुरी बातों पर विचार किया करते थे। वह सोचा करते थे कि मनुष्य रोग से ग्रस्त क्यों होता है ? बुढ़ा क्यों होता है ? वह क्यो मरता है ? क्या इन दुःखद अवस्थाओं से बचने का कोई उपाय है ?

मात्र 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह 16 वर्षीय यशोधरा से हुआ। उनको विलासिता और सुख सुविधाओं उपलब्ध कराकर सन्तुष्ट करने का भरपूर प्रयास किया पर युवा राजकुमार का मन कहीं और किसी अन्य चिन्ताओं में उलझा हुआ था। उनके यहाँ पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया।

इसके पश्चात् भी उनका मन सांसरिकता से रमा नही और उन्होने 28 वर्ष आयु में राजसी जीवन का परित्याग करने और भिक्षु साधु बनने का निर्णय लिया और मानव के दुःखो से मुक्ति का उपाय खोजने निकल पड़े। अनेक विद्ववानो एवं तपस्वियों के सम्पर्क में आने के पश्चात् निरंजना नदी के किनारे छः वर्ष तक तपस्या की और 528 ई. पूर्व में 35 वर्ष की अवस्था वैशाख पूर्णिमा के ही दिन बुद्ध गये, बिहार के बौधिवृक्ष वटवृक्ष के नीचे उनको बुद्धत्व प्राप्त हुआ और वे बुद्ध बन गये। बुद्ध होने के पश्चात् वाराणसी के निकट सारनाथ में उन्होने अपना प्रथम उपदेश दिया जिसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है। इसके पश्चात् 45 वर्षों तक निरन्तर भ्रमण करने और उपदेश देते रहने के उपरांत 80 वर्ष की आयु में 483 ई. पू. में कुशीनगर के निकट शाल वनों में भगवान बुद्ध ने संसार से विदा ली। इस घटना को महापरिनिर्वाण कहा जाता है। आज भी बुद्ध एक प्रकाशपुंज है, सारा जगत उनके प्रकाश से आलोकित है। दुनिया के प्रथम वैज्ञानिक चिन्तक, अदभुत विचारक, पथ–प्रदर्शक, कुशलता का उपदेश देने वाले मानवता के महान प्रबल तथा दया और करूणा के उस महासमुद्र सारा विश्व नतमस्तक है।

भारत मे बोद्ध र्धम के विकास के चरण :– बुद्ध की मृत्यु के बाद प्रारम्भिक कुछ शताब्दियो तक अनेक जीवन की कथाओ का स्मरण और अलंकार किया गया। उनके उपदेशों का संरक्षण तथा विकास हुआ और उनके व्दारा स्थापित समुदाय एक महत्वपुर्ण धार्मिक शक्ति बन गया। पहली शताब्दी के बौद्ध धर्म मगध और कोशल के अपने उत्पत्ति स्थान से अधिकांश उत्तर भारत मे गया जिसके पश्चिम के मथुरा और उज्जयनी (उज्जैन) के क्षेत्र भी शामिल थे।

तीसरी शताब्दी ई.पू मे मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल मे समूचे उप महाव्दीप मे इस धर्म के प्रचार में बहुत मदद मिली। प्रथम बौद्ध राजा अशोक ने अपने राज्य मे आत्म नियंत्रण, हर्ष, सत्य तथा अच्छाई पर आधारित सम्यक धर्म की स्थापना का प्रयास किया। पहली शताब्दी ई.पू तक बौद्ध धर्म न केवल अपने प्रभाव को बनाये रखने बल्कि उसका विस्तार करने मे भी सफल हो गया। समूचे उपमहाद्वीप में बौद्ध मठ और भरहुत तथा सांची के महान स्तुपों जैसे विशाल बौद्ध स्मारक स्थापित किये गये और इसके बाद भी आरम्भिक शताब्दियों में पश्चिमोत्तर भारत में बौद्ध धर्म विशेष रूप से फल फूल रहा था और वहां से तेजी से मध्य एशिया व चीन में फैला।

गुप्तकाल में बौद्ध धर्म :– अशोक तथा कनिष्क के साम्राज्य में बौद्धधर्म का विस्तार बहुत उत्कर्ष रहा। दक्षिण भारत के शतकर्णी के राज्य काल में बौद्ध धर्म को राज्य श्रेय मिला। इस राज्य की राजधारी धान्यकटक और राज्य का विस्तार बढ जाने पर प्रतिष्ठान के आश्रय से ही अजिंठा नागार्जुनकोण्डा आदि गुफाओं का निर्माण हुआ। इस सत्ता का कार्यकाल ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से इस्वी 225 तक रहा। यह सत्ता नष्ट होने पर भारत में छोटे छोटे राज्य निर्माण हुए। इसी दौरान मगध के बृहद्रथ मौर्य की हत्या कर ईसा पूर्व 185 में पुष्यमित्र ने भागवंश का राज्य स्थापित किया। इसी का लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त ने मगध के पाटलिपुत्र नगर मे ई. स. 319 में अपना राज्य स्थापित किया। इस गुप्तवंश में चन्द्रगुप्त में चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, द्वितीय चन्द्रगुप्त स्कन्ध गुप्त आदि राजा प्रमुख हुए। वे भगवान (वैष्णव) धर्म के और वासुदेव कृष्ण को मानने वाले थे। गुप्तों के समय वासुदेव कृष्ण की पूजा होने लगी। इसी समय पुराणों की मनगढत कथाओं का निर्माण किया गया। पुराणों में भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार मान लिया, ब्राम्हणों के प्रचार के कारण मगध से स्वविरवादी बौद्ध धर्म हटता गया और महामानी बौद्ध धर्म शक्तिवान बना। फिर भी जनता के बौद्ध विहारों का निर्माण

www.ignited.in

तथा नालन्दा, विक्रमशीला उदन्तपुरी जैसे विद्यापिठों की स्थापना हुई। भगवान बुद्ध की अनेक बौद्ध मूर्तिया तथा अजिंठा आदि स्थलो की अनेक गुफाये इसी समय निर्मित हुई थी। और गुप्त राजाओं का भी इस कार्य में महामया देनी पडी थी।

हर्षकाल में बौद्ध धर्म :– इस काल में अपने जेष्ठ बन्धु राज्यवर्धन की बंग देश के राजा शशांक ने छलकपट से हत्या करने के पश्चात् इ.स. 605 में सम्राट हर्ष ने थानें" वर का राज्य सम्भाला। इसी समय हर्ष की बहन राज्यश्री के पति की मालव से लडाई में हत्या हो गई, जिसमें कन्नौज का राज्य भी हर्ष को सम्भालना पडा बंगदेश का शशांक बौद्ध धर्म का विरोधी था अपने बुद्ध गया का बोधि वृक्ष जड़मूल से काटकर जला दिया और भगवान बुद्ध की मुर्ती नष्ट कर उस स्थान पर महेश्वर की स्थापना कर दी। सम्राट हर्ष ने सात वर्ष के अन्दर पंजाब से बंगाल तक राज्य विस्तार कर सारी व्यवस्था अच्छी कर दी। गंगा तट पर हजारो स्तुप निर्माण कर नालंदा विद्यापीठ को महायता की हर पांचवे वर्ष में अपनी समाप्ति का दान करते थे और स्वयं चीवर धारण करते थे। हर्ष के समय बौद्ध विरोधी ब्राम्हणों की शक्ति बढ गई थी उन्होने शडयंत्र रचाकर एक बार हर्ष की हत्या की साजिश भी रची थी । इस कारण हर्ष को ब्राम्हणों से सन्धि कर राज्य चलाना पड रहा था। इ.स. 697 में हर्ष के निधन के पश्चात् भारत में बौद्ध धर्म को आश्रय देने वाला आखिरी स्तम्भ भी टूट गया।

बौद्ध धर्म और शंकराचार्य के प्रयत्न :– शंकराचार्य का काल इ.स. 788 से 820 तक माना जाता है। कुमारिल भट्ट इनके पहले रहे। इन दोनो ब्राम्हणों ने बौद्ध धर्म हटाकर वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार किया। उस समय उद्योतकर, धर्म किसी शांकरखित, दिड़नाग आदि बौद्ध विद्वानों की तुलना में शंकराचार्य और मुमारिभल भट सामान्य लगते थे।

नौवी, दसवी, ग्यारवी शताब्दी में देश में बुद्ध बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर की कई मुर्तिया, लाई ताग्रमपत्र तथा शिलालेख आदि का निर्माण हुआ। एलोरा, की गुफाओं का निर्माण ग्यारहवी शताब्दी में हुआ। कन्नौज की रानी कुमारदेवी राठौड ने बारहवीं शताब्दी में सारनाथ में धम्मचक्र जिस विहार का निर्माण करवाया ऐसे कई प्रमाणों से सिद्ध होता है कि शंकराचार्य के भारत से बौद्ध धर्म हटा दिया यह कथन सरासर गलत साबित होना है।

तुर्को का आक्रमण (बौद्ध धर्म का विध्वंश) :– भारत में बौद्ध धर्म पर सबसे अधिक प्रहार तुर्को आक्रमणकारी सैनिको ने किया। मोहम्मद बिन कासिम ने इ.स. 712 में सिंध पर कब्जा कर उत्तरी भारत में बौद्ध धर्म को अधिक नुकसान पहुँचाया। इसके पश्चात् इ.स. 1030 तक गजनी के महमुद ने एक के बाद एक सात बार हमले कर उत्तरी भाग को हिला कर रख दिया। इस आक्रमण से हजारो बौद्ध विहार नष्ट कर दिये गये और सम्पत्ति लूट ली गई। 1197 में एक सरदार महमूद बिन बख्यत्यार के नालदा, विक्रमशीला, उदंतपुरी विद्यापीठ तथा बिहार – बंगाल के हजारो विहार नष्ट कर ग्रंथालयो में आग लगा दी। बौद्ध भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया।

ब्राम्हणों पुरोहित तो ग्रहस्थी होते है बौद्ध भिक्षु जैसा उनका कोई अलग वेश नही होता। उससे वे अपने को बचा सके। देश में हो रहे भिक्षुओं पर अत्याचार से तहस नहस हुए विहारो पर ब्राम्हणो द्वारा कब्जा कर भगवान बुद्ध की जगह शिवलिंग या अन्य देवों की स्थापना कर पाण्डेगिरी का धन्धा बना लिया। इस तरह महान बौद्ध धर्म का नाम देश से मिट गया।

भारत भक्ति सम्प्रदाय का उदय :– चौदहवी शताब्दी में उत्तर भारत में रामानंद के बडे संत हो गये वे अपने पंथ में जात–पात नही मानते थे। इसी शताब्दी में संत कबीर हुए उन्होने वर्ण जाति, यज्ञ, त्याग, मूर्ती पूजा आदि कर्मकाण्ड का कडा विरोध किया। 14 वीं शताब्दी में महाराष्ट्र के संत नामदेव ने समात का पुरूस्कार रख निम्न जातियों के संतो का सम्प्रदाय स्थापित किया। 17 वी भाताब्दी में संत तुकाराम ने वर्ण जाति का विरोध किया। 12 वी शताब्दी में दक्षिण भारत में बसवेश्वर ने लिंगायन सम्प्रदाय की स्थापना की। उनका भी उद्देश्य समता धर्म का प्रचार–प्रसार था। 13 वी सदी में महाराष्ट्र में चक्रधर स्वामी ने महानुभव पंथ स्थापित किया। इनका चरित्र व कार्य शैली बौद्ध धर्म के समान थी । 15 वी शताब्दी में गुरू नानक ने सिक्ख धर्म की स्थापना की यह धर्म भी वेद यज्ञ वर्ण आदि का विरोध करता है।

इसके पश्चात् जाति पण्डितो ने 1850 तक अनेक बौद्ध ग्रंथ संस्कृत में अनुवाद अपनी भाषा में प्रविष्ट किये। बाद में 1875 के रॉबर्ट कैंसर के जाति अंग्रेजी शब्दकोश तैयार किया और 1882 में व्हीस डेव्हिडस ने इंग्लैड में पाली टेबस्ट सोसायटी स्थापित कर सम्पूर्ण पालि त्रिपटक का अंग्रेजी अनुवाद किया। 1876 में एडविन अनाल्डि ने लाइट ऑफ एशिया और डॉ. न्यूमन ने 1893 में दीर्घ निकाय धम्मद आदि ग्रंथ अंग्रेजी में प्रकाशित किये प्रत्यक्ष भारत से हटकर हैरिग्टन, जनरल कनिंघन, जेम्स प्रिन्सेरा, आदि ने अशोक के शिला स्तम्भो की तथा बुद्ध गया, सारनाथ, लुम्बिनी, सांबी, अजिंठा आदि विस्मृति में पड़े हए बौद्ध स्थानो की खोज का उनको प्रकाश में लाये।

भारत में युरोपियन लोगो का आवागमन :– 16 शताब्दी के अंग्रेज फ्रेंच आदि यूरोपियन नवयुग की वैज्ञानिक तकनीकी लेकर भारत आये। यहां पर 1818 तक सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजी राज्य का असर पडा। जिसके परिणाम स्वरूप पाठशालांए खोली गई और अंग्रेजी के लिए दरवाजे खोल दिये गये, जिसके कारण अंग्रेज, फ्रेंच जर्मन विद्वान लेखन भारतीय संस्कृति तथा धर्म का अध्ययन करने के लिए भारत आने लगे। इन अध्ययनकार्ता के अध्ययन का एक केन्द्रीय बिन्दु बौद्व धर्म रहा।

भारत में बौद्व धर्म का पूर्ण उदय :– बौद्व धर्म का पुनः जागरण कर धम्मदुत बनने की प्रथम सम्मान श्रीलंका के अनागरिक धर्मपाल जी ने प्राप्त किया वे सन 1891 में भारत आये और बौद्व तीर्थो की दुर्दशा अत्यंत व्यथीत हो गये तब उन्होने धम्म कार्य के लिए महाबोधी सभा की स्थापना कर कलकत्ता में कार्यालय आरम्भ कार्य प्रारंभ किया और सारनाथ सांबी, मद्रास, मुम्बई, बेंगलोर आदि के शाखाये प्रारम्भ की। उन्होने महकत्ता के सन 1892 में अंग्रेजी मासिक पत्रिका महाबोधि की प्रकाशन भी किया और बौद्ध धर्म का उदय हुआ।

भारत में सर्वप्रथम महारथविर महाविरका जी सन 1884 में श्रीलंका जाकर महंत सुमंगल चार्यजी से भिक्षु दीक्षा प्राप्त कर कुसीनगर में एक धर्मशाला का निर्माण कर बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार प्रारम्भ किया। सन 1892 में वर्मा से अल्पवयस्क श्रामणेर चन्द्रमर्णी भारत आये और महाविर बाबा के सहायक के रूप में भारत एवं नेपाल में धर्म का प्रचार–प्रसार करने लगे। कुछ वर्षो पश्चात् महास्थविर चन्द्रमणीजी के नाम से प्रसिद्ध हुए और डॉ. बाब साहेब आम्बेडकर के दीक्षा गुरू बने।

भारत में बोद्ध धर्म का नवोदय :– भगवान बुद्ध की 2500 वी जयंती के अवसर पर डॉ. बाबा साहेब ने अपनी दीक्षा के लिए सुवर्ण अवसर समझा । और सन 1935 में हिन्दू धर्म को त्याग

www.ignited.in

कर सभी धर्म का गहन अध्ययन किया। और सन 1956 विजयादशमी (14 अक्टूबर) की महास्थविर चन्द्रमणी द्वारा नागपुर की दीक्षा भूमि पर अपने पाँच लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा सम्पूर्ण भारत में बुद्ध की प्रतिमा स्थापित की जाने लगी ओर चिवरधारी भिक्षू संध द्वारा'' बुद्ध भारण गच्छति'' सम्पूर्ण भारत में गुंजने लगे।

बौद्ध धर्म ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए सर्वकालिक सार्वभौमिक साथ है, जैसा गौतम बुद्ध ने खोजा व घोषित किया था, धर्म बुद्ध और संघ (बौद्ध मठ व्यवस्था) मिलकर त्रिरत्न या तीन रत्न है जो बौद्ध सिद्धान्त और अरवरण के प्राथमिक स्त्रोत है, बौद्ध अध्यात्म में बहुवचन के रूप में इस शब्द को उपयोग अन्तर्गत सम्बधिंत तत्वों के उल्लेख के लिये होना है जो अनुभवजन्य विश्व की रचना करते है।''

विश्व मे बौद्ध धर्म :– 19 वीं – 20वीं शताब्दी बौद्ध धर्म के लिये चुनौती पूर्ण रही । जैसे–जैसे आधुनिक विचारधारा जोर पकड़ने लगी वैसे–वैसे बौद्ध धर्म का उत्साह बढ़ गया और उन्होने बौद्ध धर्म को आश्रम व सांस्कृतिक प्रकृतियों से जोड़ दिया। जिन्हें वे पश्चिमी सभ्यता के मध्य सुरक्षित और सशक्त बनाने, कार्य करने और सुधारो की शुरूआत की ताकि आधुनिक विश्व के बौद्ध धर्म अधिक आत्मसमर्पण कर प्रभावशाली बन सके, इसके लिये उन्होने धर्म प्रचार केन्द्रो के माध्यम से बौद्ध धर्म को मजबुत बनाने का प्रयास किया और सभी देशों के बौद्ध अनुयायीयो के सहयोग से **वर्ल्ड फेलोशिप आफ बुद्धिस्ट** 1950 और **वर्ल्ड बुद्धिस्ट संघ काउंसिल 1966** जैसे संगठनो की स्थापना की। दो सहस्राब्दी से अधिक समय तक बौद्ध धर्म पहले मूल स्थान भारत में और बाद में अन्य देशों मे एक सशक्त धार्मिक राजनैतिक और सामाजिक शक्ति रहा और आज भी विश्व के कई हिस्सो में यह एक सशक्त धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक शक्ति है।

बौद्ध धर्म का महत्व :– धर्म व्यक्तिगत साधना है, आन्तरिक पवित्रता का पर्याप्त सार्थक भाब्द है। मानवता समता और अहिंसा की भूमि है। मैत्री, मुदिता, करूणा और उपेक्षा भावों का अनुवर्तन, समता और अपरिग्रह का अनुचिन्तन, तटरथता और परिशुद्धि का अनुग्रहण तथा संयम और सदचरित्र का अनुसाधन धर्म के प्रधान स्तम्भ है। धर्म आडम्बर नही, परिणाम विशुद्धि का निश्यनन्द है मुखैटा नही सतत अभ्याय का प्रतिफल है, वासना तृप्ति का साधन नही, परिवर्तन का सिद्धान्त है, अशांति का कारण नहीं शक्ति का पुजारी है।

बुद्ध अपने युग के क्रान्तिकारी, चिन्तक, मार्गदर्शक एवं दार्शनिक है। उनके चिन्तन और दर्शन में ऐसे क्रान्तिकारी तत्व है, जो वर्तमान समाज के क्रातिकारी परिवर्तन के लिये प्रयासरत लोगो का मार्गदर्शन कर सकते है। डॉ. बाबसाहेब समाजिक नेताओं से लड़ते रहे। उन्होने इस आधुनिक युग में बुद्ध गत को स्वीकार किया।

डॉ. अम्बेडकर द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार :– डॉ. अम्बेडकर भारतीय समाज व्यवस्था में जो सतह के लोग थे अत्यंत अछूत थे, जो दलित और सर्वहारा थे, उस समाज के प्रतिनिधि थे, नेता थे। इस समाज की सदीयों से चली आ रही गुलामी दासता को समाप्त करने के लिए इस समाज की दृष्टि से उन्होंने अपना चिन्तन किया और कार्य शुरू किया। अत्यंत अछूत समाज उनके चिन्तन का मुख्य आधार था। डॉ.अम्बेडकर ने भारतीय समाज को सामाजिक व्यवस्था और संस्थाओं का अध्ययन विश्लेषण किया। उन्होंने प्राचीन इतिहास के मध्यकालीन इतिहास की ओर आधुनिक इतिहास के सामाजिक सांस्कृतिक और दार्शनिक संघर्षो का अध्ययन किया इसलिये उन्होंने गौतम बुद्ध, संत कबीर और महात्मा फुले को अपनी प्रेरणा माना। उन्होने भारतीय समाज के ऐतिहासिक धरातल को ही अपने चिन्तन और मनन का आधार बनाकर भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारीक इतिहास संघर्षों का अध्ययन और विश्लेषण किया। उन्होंने भारतीय इतिहास की प्रतिक्रियावादी धाराये और क्रान्तिकारी परिवर्तन का हथियार बनाने के लिये, दलितों अछुतो, सर्वहारा वर्ग तथा राजनैतिक नेताओं के सामने बुद्ध को पर्याय के रूप में खड़ा कर दिया।

बौद्ध धर्म की वर्तमान स्थिति :– आज के परिवेश में चाहे कोई भी धर्म हो हिन्दु, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, पारसी, ईसाई, यहुदी धर्म, शुद्ध धर्मयान आसानी से अपने विवेकानुसार ग्रहण कर सकता है। इसलिय व्यक्ति अपनी सुविधानुसार धर्म ग्रहण कर लेता है। इसलिये आज विश्व में बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है। आज विश्व के अधिकांश देश जैसे– भारत, भूटान, चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया, श्रीलंका, बर्मा, बांग्लादेश, थाईलैंड, दक्षिण पूर्ण एशिया आदि के अतिरिक्त और भी देश है जहाँ बौद्ध धर्म का व्यापक प्रसार हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सुची :–

1. एम. जी. चितकारा, डॉ. अम्बेडकर टू वर्डस बुद्धिज्म (1997) अ.पू. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, 5 अंसारी रोड़, नई दिल्ली, पृष्ठ–23
2. द स्ट्रेवचर वेट सेकी, बुद्धिष्ठ लाजिक (1996) मुंशीराम पब्लिशर 54 झांसी रानी रोड़, नई दिल्ली, पृष्ठ–92
3. डॉ. वसूंधरा मिश्र, बौद्ध धर्म की जीवन पद्धतियाँ (2004) बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, निर्मि कालोनी, अशोक विहार, फेज–4 नई दिल्ली, पृष्ठ–12
4. डॉ. भदन्त आनंद कौशल्यायन, बौद्ध धर्म का सार्थ (1948) सिद्धार्थ गौतम शिक्षा संस्थान, एवं संस्कृति समिति, धनसारी, अलिगढ उत्तरप्रदेश, पृष्ठ–05
5. प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, बौद्ध दर्शन प्रस्थान (1997) केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ–84
6. सी.डी. नाईक, बौद्ध वचन तथा अम्बेडकर विचार (2006) कल्पाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ– 55–59
7. सी.डी. नाईक, बौद्धत्व के अग्रदुत और अम्बेडकर (2007), कल्पाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ–64
8. डॉ. भदन्त आनंद कौ" ाल्यायन, भगवान बुद्ध और उनका धर्म (1996) बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपूर, पृष्ठ–112